

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 24 September 2026

बिहार में शांत क्रांति : मोदी-नीतीश की रणनीति ने बिना लहर के दिलाई ऐतिहासिक जीत

Publisher

Published on 15 Nov 2025



बिहार विधानसभा चुनाव 2025 ने भारतीय राजनीति में एक नया मॉडल प्रस्तुत किया है—जिसमें न कोई चुनावी लहर थी, न कोई तीखा माहौल, फिर भी एनडीए ने अप्रत्याशित रूप से भारी जीत हासिल की। यह जीत इसलिए भी खास मानी जा रही है क्योंकि इसमें भावनात्मक जनमत लहर या किसी बड़े मुद्दे के उभार का योगदान नहीं था। बल्कि यह जीत शांत, सुनियोजित और बूथ-आधारित रणनीति का परिणाम थी। 2024 के राष्ट्रीय चुनावों के बाद बीजेपी ने अपने राजनीतिक दृष्टिकोण में बदलाव किया था, और वह बदलाव बिहार में पूरी तरह दिखाई दिया। पार्टी अब यह मानकर नहीं चल रही थी कि नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता हर जगह एक जैसी ऊर्जा पैदा करेगी। इसके बजाय उसने स्थानीय समीकरण, मध्यम वर्गीय मतदाता की सोच और विकास-केंद्रित राजनीति पर ध्यान केंद्रित किया।

भारतीय राजनीति में वर्षों से यह धारणा रही है कि चुनाव बड़े जनमत बदलाव या किसी नेता की असाधारण लोकप्रियता से जीते जाते हैं। इसे ही चुनावी 'लहर' कहा जाता है। लेकिन बिहार के इस चुनाव परिणाम ने इस धारणा को चुनौती दी। हर सीट पर कड़ा मुकाबला था, सभी प्रमुख दल मैदान में मजबूती से उतरे थे, लेकिन अंतिम परिणाम एकतरफा रहा और एनडीए भारी बहुमत के साथ विजयी हुई। यह स्पष्ट संकेत देता है कि चुनाव जीतने की कला अब सिर्फ लहरों पर नहीं, बल्कि मजबूत संगठन और सूक्ष्म रणनीति पर निर्भर करती जा रही है।

यह बदलाव अचानक नहीं आया। महाराष्ट्र और हरियाणा में भी बीजेपी ने इसी मॉडल को अपनाया था—जहाँ बड़ी लहरों की जगह बूथ-स्तर पर सटीक प्रबंधन और संयमित प्रचार अभियान के सहारे करीबी मुकाबलों को जीत में बदला गया। बिहार में भी यही रणनीति अपनाई गई। जैसे एक टेस्ट मैच खेलने वाली टीम हालात को परखकर धैर्य से खेलती है और फिर आखिरी सत्र में टी-20 की तेजी से मैच खत्म कर देती है, ठीक वैसे ही एनडीए ने चुनाव के अंतिम दौर तक फोकस बनाए रखा। पूरे चुनाव अभियान में बूथ-वर्कर नेटवर्क, वोटिंग पैटर्न की निगरानी, और अंतिम राउंड तक काउंटिंग स्ट्रैटेजी का लगातार अनुशासन कायम रहा।

इस चुनाव की असली कुंजी वह 'मध्य मतदाता' रहा जो न बहुत शोर मचाता है, न सोशल मीडिया पर अपनी राय देता है, और न ही

राजनीति को लेकर अत्यधिक भावुक होता है। यह मतदाता रोजमर्रा के जीवन, स्थिरता और विश्वसनीय शासन को तरजीह देता है। उसे भरोसेमंद कल्याण योजनाएँ, मजबूत कानून-व्यवस्था और महिलाओं की सुरक्षा जैसे मुद्दे प्रभावित करते हैं। एनडीए ने इस वर्ग की जरूरतों को सही तरीके से पहचाना और उसे भरोसा दिलाया कि अगले पाँच वर्षों में स्थिर शासन और सुशासन प्राथमिकता में रहेगा।

इसके विपरीत, महागठबंधन गुस्सा, असंतोष और भीड़ जुटाने के अपने पारंपरिक मॉडल पर टिका रहा। उसके पास जन-भावनाओं को व्यवस्थित ढंग से रूपांतरित करने की रणनीति कमज़ोर रही। भीड़ जुटाना अलग बात है, लेकिन मतदाताओं को मनाना और भरोसा दिलाना बिल्कुल अलग कला है। इस बार महागठबंधन चुनावी शिकायतें उठाने में तो आगे रहा, लेकिन लोगों को समझा पाने में सफल नहीं हो सका। यह चुनाव उन लोगों के लिए सबक बन गया कि चुनावी रैलियों की भीड़ हमेशा वास्तविक जमीन पर टिके वोटों में तबदील नहीं होती।

बिहार का यह चुनाव बताता है कि भरोसा जीतने वाला ही असल में चुनाव जीतता है। एनडीए ने इसे बूथ-स्तर से लेकर अंतिम परिणाम तक लागू किया। लहर भले नहीं थी, लेकिन अनुशासन, रणनीति, भरोसा और लगातार संवाद ने इसे ऐतिहासिक जीत में बदला। यह मॉडल आने वाले वर्षों में भारतीय चुनावों की नई दिशा तय कर सकता है—जहाँ बड़े नारों से अधिक महत्व रणनीति और संगठन का होगा।

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Publisher, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.